राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

नेतृ-सैनिकयोर्मध्ये, वरीयान् सैनिकः सदा ।
राष्ट्रं सुरक्षति नित्यं, प्राणान् दत्वाऽपि सैनिकः ॥२६८॥

नेता और सैनिक के बीच सैनिक ही सदा महान् होता है। सैनिक प्राण देकर भी राष्ट्र की नित्य सुरक्षा किया करता है।

Between a politician and a soldier, a soldier is always greater. A soldier will always protect his nation even at the cost of life.

नैव सीमा विचाराणां, सन्तोऽसन्तश्च ते किल ।
विचारेव विश्वस्य, सृष्टिः स्थितिश्च संहृतिः ॥२६९॥

विचारों की सीमा नहीं होती। वे निश्चितरूप से सत् औऱ असत् अर्थात् अच्छे और बुरे दो तरह के होते हैं। विचारों से ही विश्व की सृष्टि, पालन और संहार होता है।

Thoughts have no limits. They can be either true or untrue, good or bad. With thoughts the world is created, protected and destroyed.

नौमि तान् शिक्षकान् नित्यं, ज्ञान-विज्ञान-सागरान् ।
सर्वज्ञानं प्रदायापि, रिक्ता ये न कदाचन ॥२७०॥

मैं ज्ञान-विज्ञान के सागर उन शिक्षकों को नित्य नमन करता हूँ जो अपना समस्त ज्ञान शिष्यवर्ग को प्रदान करके भी कभी रिक्त नहीं होते हैं।

In this ocean of knowledge, I always express my respect to those teachers, who even after giving their whole knowledge are not empty (of it).

पक्षपातो न कर्तव्यः, सर्वकारेण कुत्रचित् ।

सर्वस्यापि हिते तेन, कर्म कार्यं सदा शुभम् ॥२७१॥

सरकार को कहीं भी पक्षपात नहीं करना चाहिये । उसको तो सभी के हित में सदा ही शुभ कर्म करने चाहिये ।

The government should never be biassed. It should always do the good work which is in the interest of all.

पक्षेण च विपक्षेण, मान्यो यो निर्णयो नहि ।

कथं शुद्धः प्रशस्यः स, सन्देहाच्च परे पुनः ?॥२७२॥

जो निर्णय पक्ष और विपक्ष को माननीय न हो वह कैसे शुद्ध प्रशंसनीय और सन्देह से परे है ?

How will the one who neither accepts the decision/judgement nor its criticism rise above praise and doubt?

पत्युरेव हिते पत्नी, किं कृच्छ्रं व्रतमाचरेत् ? ।

पत्न्या हिते पतिः किं न, तथैवाचरति व्रतम् ? ॥२७३॥

पति के ही हित में पत्नी क्यों कठोर व्रत करे, पत्नी के हित में पति वैसे कठोर व्रत का आचरण क्यों नहीं करता है ?

Why should the wife do a difficult fast for her husband? Why doesn't the husband do the same difficult fast for his wife?

पत्रं दर्पण–तुल्यं हि, लेखकात्म–प्रकाशकम् ।

एतस्यानेक – रीत्याऽस्ति, सर्वत्रैवोपयोगिता ॥२७४॥

पत्र दर्पण के तुल्य होता है जो लेखक की आत्मा को प्रकाशित कर देता है । इसकी अनेक रीति से उपयोगिता रहती है ।

Paper is like a mirror that allows the writer to show his inner self. It is useful in many practices.